एच.आर.कॉलेज, मुम्बई के हीरक जयंती समारोह के उद्घाटन के अवसर पर भाषण।

———

18 जनवरी, 2020

एच.आर.कॉलेज, मुम्बई

———

एच.आर. कॉलेज के हीरक जयंती समारोह के उद्घाटन के अवसर पर आप सभी के बीच आना मेरे लिए सम्मान का विषय है। यह कॉलेज न केवल मुम्बई बल्कि भारत में भी सबसे अच्छे एनएएसी प्रत्यायित कॉलेजों में अग्रणी है और यहां उपस्थित हम सभी लोगों के लिए यह एक गौरवशाली क्षण है। साथियो, हीरक जयंती जैसे मील के पत्थर जब किसी संस्था के समक्ष आते हैं तो हमें सुखद आश्चर्य होता है। यह वह घड़ी होती है जब आरंभ से लेकर अब तक की यात्रा का लेखा जोखा लेने का अवसर आता है।

हम सब जानते हैं कि विषम परिस्थितियों का सामना भारतवासियों को विभाजन के दिनों में करना पड़ा था। पाकिस्तान के हैदराबाद, सिंध से आने वाले लोगों को अपना भरा-पूरा घरबार छोड़कर अचानक रातों रात भारत का रूख करना पड़ा। उनके सामने कई विकराल समस्याएं थीं। किन्तु ऐसी परिस्थिति में भी शिक्षा की भविष्य निर्माण में क्या भूमिका होती है, यह बात वे लोग नहीं भूले। छोटे स्तर पर ही सही परन्तु शिक्षण संस्थान की शुरूआत करना अपने आप में बहुत बड़ी बात है। एक पौधे के रूप उस छोटी सी शुरूआत ने आज विशाल वटवृक्ष का रूप धारण कर लिया है।

एच.आर. कॉलेज 11वीं कक्षा से लेकर पीएचडी स्तर तक शिक्षा प्रदान करने वाला एक प्रमुख शैक्षणिक संस्थान है। छात्रों और अभिभावकों के लिए यह गौरव का विषय है कि हैदराबाद नेशनल कॉलेजिएट बोर्ड के अन्तर्गत आने वाले 24 शैक्षणिक संस्थानों के समूह में एच.आर. कॉलेज पहला स्थान रखता है।

मित्रो, शिक्षा व्यक्ति को उसके ज्ञान के दायरे का विस्तार करने का अवसर प्रदान करती है और उसे अपने विचारों को स्पष्ट रूप से अभिव्यक्त करने में सक्षम बनाती है। इससे हमें अपने आस-पास की दुनिया और समाज को बेहतर ढंग से समझने का अवसर मिलता है। वास्तविक शिक्षा हमें अज्ञान के अंधकार से मुक्त करती है और हमारे जीवन में ज्ञान का प्रकाश लाती है तथा हमें अपनी आजीविका प्राप्त करने में सक्षम बनाती है। शिक्षा से व्यक्ति ऐसे ज्ञान और कौशल की पहचान कर विकास कर सकता है जिससे बेहतर नौकरियां और बेहतर जीवन हासिल किया जा सकता है, जिससे आगे चलकर जीवन में समृद्धि आती है तथा सामाजिक समावेशन और राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा मिलता है। डॉ. राधाकृष्णन ने हमारे राष्ट्रीय संदर्भ में एक बार कहा था: 'हम जैसे समाज का निर्माण करना चाहते हैं, हमें उसी दृष्टिकोण के साथ शिक्षा प्रदान करनी चाहिए। हम मानवीय गरिमा और समानता के मूल्यों पर आधारित आधुनिक लोकतंत्र के सृजन के लिए कार्य कर रहे हैं। यह केवल आदर्श स्थिति है। हमें इसे मूर्त रूप प्रदान करना चाहिए। हमें अपने भविष्य के लिए अपनाए जा रहे दृष्टिकोण में इन महान सिद्धान्तों को शामिल करना चाहिए। मानवीय गरिमा और समानता के आदर्श हमारे लिए में बहुत ही प्रासंगिक हैं।

शिक्षा के संबंध में स्वामी विवेकानन्द के विचारों को हमें सदा याद रखना चाहिए। उन्होंने कहा था: शिक्षा मात्र हमारे मस्तिष्क में संगृहीत होने वाली जानकारियां ही नहीं होनी चाहिए जिसको आत्मसात न किए जाने के कारण हमारे पूरे जीवन में संघर्ष की स्थिति उत्पन्न होती है। यह मानव निर्माण, चरित्र निर्माण और जीवन को विकसित करने वाले विचारों के संकलन की प्रक्रिया है। हमारे जैसे विकासशील समाज में ऐसी शिक्षा पद्धति पर जोर दिया जाना चाहिए।

गांधी जी का मानना था कि शिक्षा वही उचित है जो बच्चों को उनके उत्तरदायित्व और कर्तव्य का बोध कराए। उनके अनुसार शिक्षा तो वही सही है जो चरित्र का उचित दिशा में निर्माण करे। यह केवल रोजगार कमाने का साधन मात्र नहीं है बल्कि जीवन का स्रोत है।

वैश्विक स्तर पर, सतत विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने का संकल्प लिया गया है। लक्ष्य संख्या 4 गुणवत्तापूर्ण शिक्षा से संबंधित है तथा इसका लक्ष्य समावेशी और न्यायसंगत गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करना एवं सभी के लिए आजीवन शिक्षा-प्राप्ति के अवसरों को बढ़ावा देना है। इस संबंध में निर्धारित किये गये विभिन्न उद्देश्यों में से कुछ उच्च शिक्षा से संबंधित हैं और मैं यहां उनका उल्लेख करना चाहता हूं। उनमें से एक लक्ष्य 2030 तक विश्वविद्यालयों को शामिल करते हुए सभी महिलाओं और पुरूषों की आर्थिक रूप से वहनीय और गुणवत्तापूर्ण तकनीकी, व्यावसायिक तथा तृतीयक स्तर की शिक्षा तक समान रूप से पहुंच सुनिश्चित करने से संबंधित है।

दूसरा लक्ष्य 2030 तक रोजगार, समुचित नौकरियों और उद्यमशीलता के लिए तकनीकी तथा व्यावसायिक कौशल के साथ ही संगत कौशल का ज्ञान रखने वाले युवाओं एवं वयस्कों की संख्या में बड़े पैमाने पर बढ़ोतरी करना है। इसलिए, विश्वविद्यालयों और उच्च शिक्षा संस्थानों को इन लक्ष्यों की पूर्ति की दिशा में काम करना चाहिए तथा शिक्षा के माध्यम से हमारे राष्ट्रीय विकास एवं प्रगति में और तेजी लाने के लिए योगदान देना चाहिए।

मुझे विश्वास है कि एच.आर. कॉलेज और इसका प्रबंधन उत्कृष्टता प्राप्त करने के अपने प्रयासों को जारी रखेगा। इन्हीं प्रयासों के चलते कॉलेज को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा 'कॉलेज विद पोटेन्शियल फॉर एक्सीलेंस' का दर्जा दिया गया है। मुझे यह जानकर खुशी हुई कि इस प्रतिष्ठित संस्थान को मुम्बई विश्वविद्यालय से बेस्ट कॉलेज का पुरस्कार भी प्राप्त हुआ है।

शिक्षा के बारे में बात करते हुए हमें न केवल कौशल बल्कि मूल्यों की स्थापना के द्वारा भी मन-मस्तिष्क का विकास करने में शिक्षकों की भूमिका को नहीं भूलना चाहिए। छात्र देश का भविष्य होते हैं। इस शक्ति का उपयोग कैसे किया जाये, यह काफी हद तक शिक्षकों पर ही निर्भर करता है। छात्रों के व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास में शिक्षकों की भूमिका सदैव ही महत्वपूर्ण रही है। शिक्षा को समान, सहज रूप से सुलभ कराने और इसकी गुणवत्ता को बनाए रखने में तथा सतत वैश्विक विकास के लिए शिक्षक सबसे प्रभावकारी और शक्तिशाली भूमिका निभाते हैं। शिक्षक अपने छात्रों के लिए आदर्श प्रस्तुत करता है तथा उनके विकास के प्रत्येक पहलू को प्रभावित करता है एवं उनकी अंतर्निहित क्षमताओं को विकसित करता है। सिर्फ यही नहीं, एक शिक्षक से यह भी अपेक्षा की जाती है कि वह अपने छात्रों के लिए प्रेरणास्रोत, मार्गदर्शक और मित्र की भूमिका भी निभाए। छात्र अपने जीवन में लक्ष्यों को निर्धारित करने और उन्हें प्राप्त करने के तरीकों के बारे में अपने शिक्षक से ही प्रेरणा प्राप्त करता है।

प्रतिस्पर्धा के इस दौर में, शिक्षक पर छात्रों को प्रतिस्पर्धी बनाने और तेजी से बदलती इस दुनिया में उन्हें चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार करने की जिम्मेदारी होती है। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए, शिक्षकों को शिक्षण की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए लगातार अपने ज्ञान को अद्यतन करते रहना चाहिए। शिक्षा की गुणवत्ता शिक्षण के मानकों पर निर्भर करती है। अच्छे शिक्षकों से छात्रों के सुंदर भविष्य का निर्माण होता है और संस्थान की प्रतिष्ठा में वृद्धि होती है। इस संदर्भ में, हमारे पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के स्वर्णिम विचार ध्यान में आते हैं, उन्होंने कहा था: "शिक्षण एक ऐसा उदात्त व्यवसाय है जो किसी व्यक्ति के चरित्र, योग्यता और भविष्य को मूर्त रूप प्रदान करता है। एक अच्छे शिक्षक की छाप सदैव हमारे मस्तिष्क में बनी रहती है। शिक्षक केवल किताबों के पाठ ही नहीं पढ़ाते हैं बल्कि वे जीवन के पाठ भी पढ़ाते हैं और इसी को मूल्य आधारित शिक्षा कहा जाता है। वास्तविक शिक्षा का उद्देश्य अपरिपक्व छात्रों के जीवन में मूल्यों का समावेश करना है। जीवन का एक मूल्य राष्ट्र और व्यापक रूप से समाज के प्रति अपने कर्तव्य को समझना भी है।"

इस संदर्भ में, मैं हाल ही में संसद में आयोजित किए गए संविधान दिवस का स्मरण करना चाहता हूं। माननीय राष्ट्रपति, माननीय उपराष्ट्रपति और माननीय प्रधानमंत्री की इस कार्यक्रम में गरिमामयी उपस्थिति रही थी। सभी गण्यमान्य व्यक्तियों ने इस बात की आवश्यकता पर बल दिया था कि हमारे द्वारा अधिकारों की अपेक्षा कर्तव्यों पर ध्यान दिया जाए। हमारे संविधान के भाग चार-क में मूल कर्तव्यों से संबंधित एक अध्याय है। इन कर्तव्यों के अंतर्गत उन बुनियादी मूल्यों को दर्शाया गया है जिन्हें हमारा संविधान मूर्त रूप प्रदान करने का प्रयास करता है। मेरा यह मानना है कि स्कूलों और कॉलेजों के स्तर पर ही छात्रों को मूल कर्तव्यों के बारे में जागरूक बनाने की प्रक्रिया आरंभ की जानी चाहिए। ऐसा करना इसलिए आवश्यक है क्योंकि युवा छात्रों का मन कोमल होता है तथा आयु की इस अवस्था में उनके मन-मस्तिष्क में इन बुनियादी मूल्यों की छाप अंकित हो जाती है। यदि युवा इन मूल्यों को समझ सके तो वे अच्छे नागरिक बन सकते हैं तथा राष्ट्र निर्माण में अपनी भूमिका निभा सकते हैं। हमारे संविधान के अनुच्छेद 51-क में उल्लिखित कुछ मूल्य कर्तव्यों का मैं यहां उल्लेख करना चाहता हूं।

- भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करें, जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभाव से परे हो, ऐसी प्रथाओं का त्याग करें जो स्त्रियों के सम्मान के विरूद्ध हैं;
- प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अंतर्गत वन, झील, नदी और वन्य जीव हैं, रक्षा करें और उसका संवर्धन करें तथा प्राणी मात्र के प्रति दयाभाव रखें;
- वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानर्जन तथा सुधार की भावना का विकास करे;
- सार्वजनिक संपत्ति को सुरक्षित रखें और हिंसा से दूर रहें;
- व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत प्रयास करें जिससे राष्ट्र निरंतर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धियों की नई ऊंचाइयों को छू ले।

मित्रो, इस समय पूरे विश्व की तुलना में भारत की जनसंख्या में युवाओं की संख्या सर्वाधिक है, भारत के 60 प्रतिशत से भी अधिक युवा कामकाजी आयु वर्ग में आते हैं जोकि भारत के लिए एक लाभ की स्थिति है। इस युवा जनसंख्या का प्रभावी तरीके से लाभ प्राप्त करने के लिए गुणवत्तायुक्त शिक्षा प्रदान किया जाना एक अनिवार्य पूर्व अपेक्षा है।

सरकार ने उच्च शैक्षणिक संस्थाओं की शिक्षा की गुणवत्ता को सुधारने के लिए उच्च शिक्षा गुणवत्ता सुधार कार्यक्रम अधिदेश अपनाया है। इस गुणवत्ता अधिदेश का लक्ष्य, एक सार्थक जीवन जीने के लिए देश की भावी पीढ़ी को महत्वपूर्ण कौशल, ज्ञान और आदर्शों से परिपूर्ण बनाने के लिए एक उच्च शिक्षा प्रणाली विकसित करना है। हाल ही में मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने गुणवत्ता अधिदेश के अंतर्गत 5 विषयों को शामिल करते हुए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा विकसित पांच दस्तावेज लागू किये हैं। इन पांच दस्तावेजों में मूल्यांकन सुधार, पर्यावरण अनुकूल और सतत विश्वविद्यालय परिसर, मानवीय मूल्य और व्यावसायिक आचार, संकाय सदस्यों का प्रशिक्षण कार्यक्रम तथा शैक्षणिक शोध सत्यनिष्ठा आदि विषय शामिल हैं। मुझे विश्वास है जैसाकि सरकार द्वारा योजना बनाई गई है, इन नई पहलों से भारत के उच्च शिक्षा क्षेत्र की समग्र गुणवत्ता में सुधार होगा।

हीरक जयंती समारोह एक ऐसा अवसर है जब हमें इस संस्थान की उपलब्धियों पर गर्व होता है। इसके साथ ही इस अवसर पर हम उच्च लक्ष्य निर्धारित करें और शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्टता प्राप्त करने और इसकी गुणवत्ता को बढ़ाने का प्रयास करें। इस अवसर पर मैं मुम्बई विश्वविद्यालय के कुलपति, प्रो. सुहास पेडनेकर जी तथा हैदराबाद नेशनल कोलिजिएट बोर्ड के न्यासियों और पदाधिकारियों के प्रति अपना हार्दिक आभार व्यक्त करता हूं। मैं एच.आर. कॉलेज के शिक्षकों, छात्रों, अधिकारियों और कर्मचारियों तथा इस संस्थान से जुड़े सभी व्यक्तियों की इस समारोह के आयोजन में अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करने के लिए प्रशंसा करता हूं। मैं आप सभी को एक सुखद और समृद्ध नववर्ष की शुभकामनाएं देता हूं।